



Mr. Hemant

25 Dec 1999

08:10 PM

Jaipur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119170001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 25/12/1999
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 20:10:00 घंटे
इष्ट _____: 32:22:07 घटी
स्थान _____: Jaipur
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:53:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:26:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 19:43:20 घंटे
वेलान्तर _____: 00:00:12 घंटे
साम्पातिक काल _____: 01:58:01 घंटे
सूर्योदय _____: 07:13:09 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:39:58 घंटे
दिनमान _____: 10:26:49 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 09:29:46 धनु
लग्न के अंश _____: 13:02:44 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: आश्लेषा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: वैधृति
करण _____: बव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डी-डीगेश्वर
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मकर

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1921	पौष	4
पंजाबी	संवत : 2056	पौष	10
बंगाली	सन् : 1406	पौष	9
तमिल	संवत : 2056	मार्गशी	10
केरल	कोल्लम : 1175	धनु	10
नेपाली	संवत : 2056	पौष	10
चैत्रादि	संवत : 2056	पौष	कृष्ण 3
कार्तिकादि	संवत : 2056	मार्गशीर्ष	कृष्ण 3

पंचांग

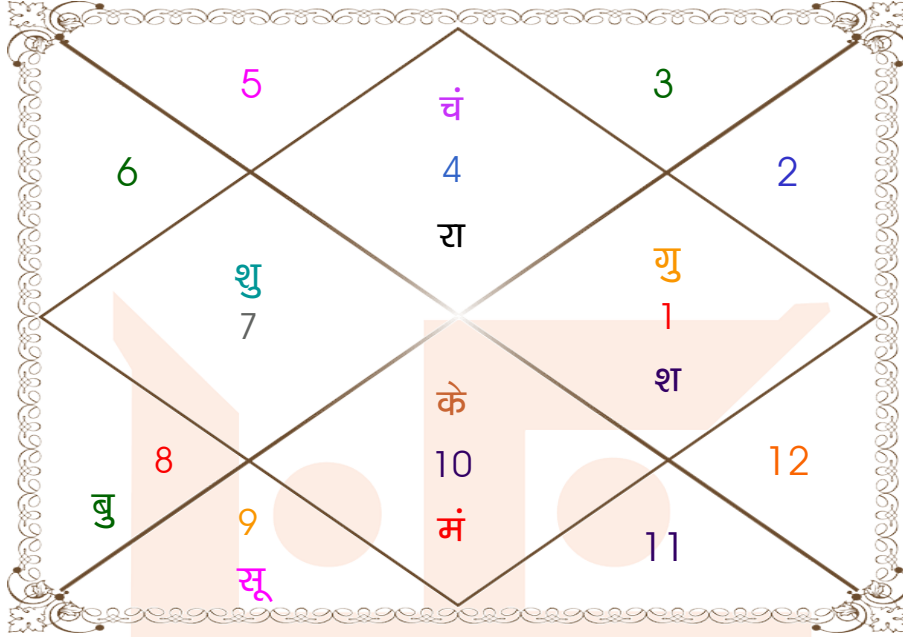
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
 तिथि समाप्ति काल _____ : 12:46:24
 जन्म तिथि _____ : 4
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पुष्य
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 15:13:11 घंटे
 जन्म योग _____ : आश्लेषा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : वैधृति
 योग समाप्ति काल _____ : 21:29:07 घंटे
 जन्म योग _____ : वैधृति
 सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
 करण समाप्ति काल _____ : 12:46:24 घंटे
 जन्म करण _____ : बव
 भयात _____ : 12:22:05
 भभोग _____ : 55:48:49
 भोग्य दशा काल _____ : बुध 13 वर्ष 2 मा 8 दि

घात चक्र

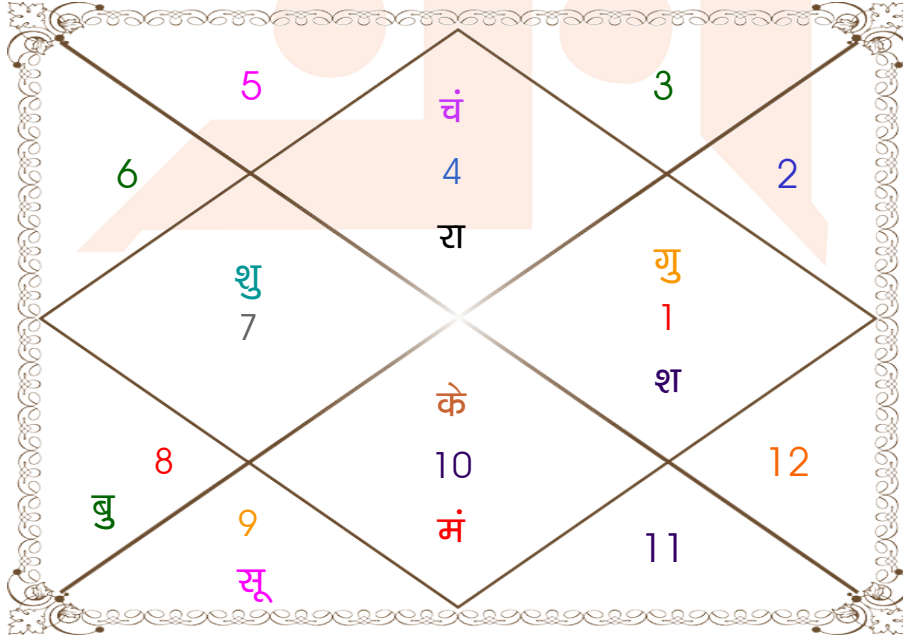
मास _____ : पौष
 तिथि _____ : 2-7-12
 दिन _____ : बुधवार
 नक्षत्र _____ : अनुराधा
 योग _____ : व्याघात
 करण _____ : नाग
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मेष
 लग्न _____ : तुला
 सूर्य _____ : सिंह
 चन्द्र _____ : सिंह
 मंगल _____ : कन्या
 बुध _____ : मिथुन
 गुरु _____ : तुला
 शुक्र _____ : वृश्चिक
 शनि _____ : कर्क
 राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	श गु		
			रा ल चं
के मं			
सू	बु	शु	

लग्न कुण्डली

	श गु	
रा ल चं		के मं
	शु	सू
	बु	

विंशोत्तरी
बुध 13वर्ष 2मा 8दि
बुध

25/12/1999

05/03/2116

बुध	04/03/2013
केतु	04/03/2020
शुक्र	04/03/2040
सूर्य	04/03/2046
चन्द्र	04/03/2056
मंगल	05/03/2063
राहु	04/03/2081
गुरु	04/03/2097
शनि	05/03/2116

योगिनी
भ्रामरी 3वर्ष 1मा 7दि
संकटा

31/01/2021

31/01/2029

संकटा	12/11/2022
मंगला	01/02/2023
पिंगला	13/07/2023
धान्या	13/03/2024
भ्रामरी	31/01/2025
भद्रिका	13/03/2026
उल्का	13/07/2027
सिद्धा	31/01/2029



FUTUREPOINT
Astro Solutions



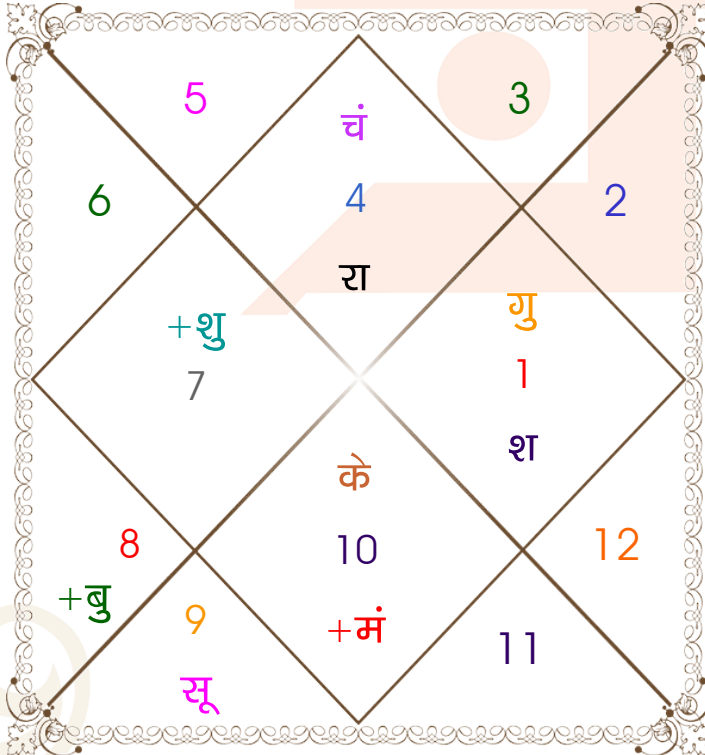
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	13:02:44	309:53:19	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	राहु	---
सूर्य			धनु	09:29:46	01:01:07	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	19:39:16	14:27:01	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	शुक्र	स्वराशि
मंगल			मक	28:46:05	00:46:31	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	उच्च राशि
बुध			वृश्चि	27:26:07	01:31:18	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	सम राशि
गुरु			मेष	01:12:00	00:01:02	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र			तुला	29:24:49	01:12:00	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	सूर्य	स्वराशि
शनि	व		मेष	16:43:21	00:01:56	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	नीच राशि
राहु			कर्क	10:06:27	00:00:45	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
केतु			मक	10:06:27	00:00:45	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	शत्रु राशि
हर्ष			मक	20:37:14	00:02:50	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	---
नेप			मक	09:06:02	00:02:02	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
प्लूटो			वृश्चि	17:21:14	00:02:12	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	---
दशम भाव			मेष	07:48:27	--	अश्विनी	--	1	मंगल	केतु	गुरु	--

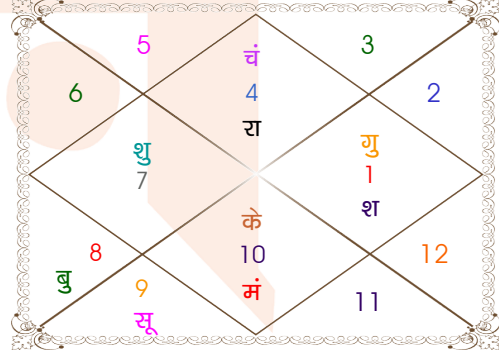
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:51:11

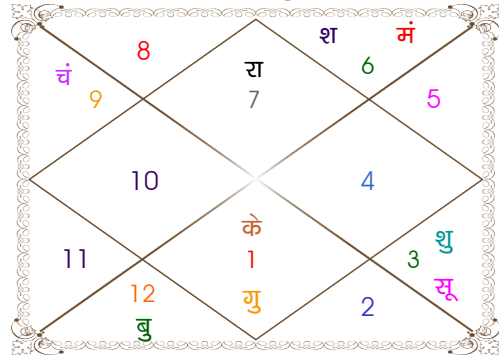
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 27:10:21	कर्क 13:02:44
2	कर्क 27:10:21	सिंह 11:17:58
3	सिंह 25:25:35	कन्या 09:33:12
4	कन्या 23:40:50	तुला 07:48:27
5	तुला 23:40:50	वृश्चिक 09:33:12
6	वृश्चिक 25:25:35	धनु 11:17:58
7	धनु 27:10:21	मकर 13:02:44
8	मकर 27:10:21	कुम्भ 11:17:58
9	कुम्भ 25:25:35	मीन 09:33:12
10	मीन 23:40:50	मेष 07:48:27
11	मेष 23:40:50	वृष 09:33:12
12	वृष 25:25:35	मिथुन 11:17:58

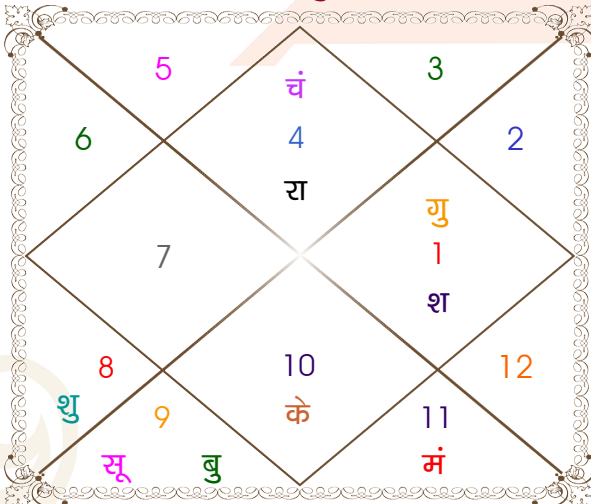
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	13:02:44
2	सिंह	07:23:44
3	कन्या	05:38:19
4	तुला	07:48:27
5	वृश्चिक	11:21:06
6	धनु	13:23:13
7	मकर	13:02:44
8	कुम्भ	07:23:44
9	मीन	05:38:19
10	मेष	07:48:27
11	वृष	11:21:06
12	मिथुन	13:23:13

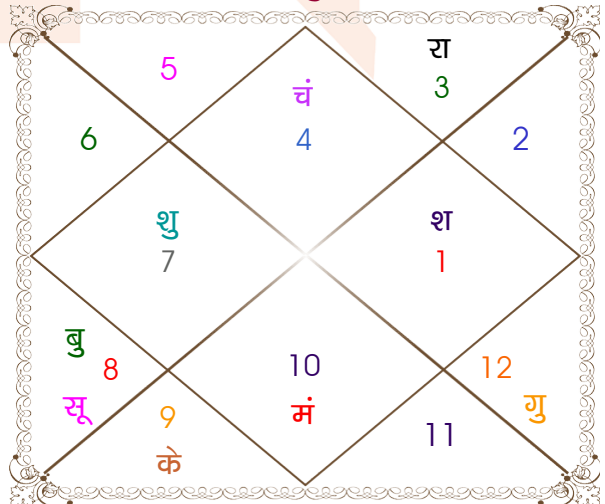
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 13 वर्ष 2 मास 8 दिन

बुध 17 वर्ष 25/12/1999 04/03/2013	केतु 7 वर्ष 04/03/2013 04/03/2020	शुक्र 20 वर्ष 04/03/2020 04/03/2040	सूर्य 6 वर्ष 04/03/2040 04/03/2046	चंद्र 10 वर्ष 04/03/2046 04/03/2056
00/00/0000	केतु 31/07/2013	शुक्र 04/07/2023	सूर्य 21/06/2040	चंद्र 03/01/2047
25/12/1999	शुक्र 30/09/2014	सूर्य 04/07/2024	चंद्र 21/12/2040	मंगल 04/08/2047
शुक्र 29/05/2002	सूर्य 05/02/2015	चंद्र 04/03/2026	मंगल 28/04/2041	राहु 02/02/2049
सूर्य 04/04/2003	चंद्र 06/09/2015	मंगल 05/05/2027	राहु 23/03/2042	गुरु 04/06/2050
चंद्र 03/09/2004	मंगल 02/02/2016	राहु 04/05/2030	गुरु 09/01/2043	शनि 03/01/2052
मंगल 31/08/2005	राहु 20/02/2017	गुरु 02/01/2033	शनि 22/12/2043	बुध 03/06/2053
राहु 19/03/2008	गुरु 27/01/2018	शनि 04/03/2036	बुध 27/10/2044	केतु 03/01/2054
गुरु 25/06/2010	शनि 08/03/2019	बुध 03/01/2039	केतु 04/03/2045	शुक्र 03/09/2055
शनि 04/03/2013	बुध 04/03/2020	केतु 04/03/2040	शुक्र 04/03/2046	सूर्य 04/03/2056
मंगल 7 वर्ष 04/03/2056 05/03/2063	राहु 18 वर्ष 05/03/2063 04/03/2081	गुरु 16 वर्ष 04/03/2081 04/03/2097	शनि 19 वर्ष 04/03/2097 05/03/2116	बुध 17 वर्ष 05/03/2116 00/00/0000
मंगल 31/07/2056	राहु 15/11/2065	गुरु 22/04/2083	शनि 08/03/2100	बुध 02/08/2118
राहु 19/08/2057	गुरु 09/04/2068	शनि 03/11/2085	बुध 16/11/2102	केतु 30/07/2119
गुरु 25/07/2058	शनि 14/02/2071	बुध 09/02/2088	केतु 26/12/2103	शुक्र 26/12/2119
शनि 03/09/2059	बुध 03/09/2073	केतु 14/01/2089	शुक्र 25/02/2107	00/00/0000
बुध 30/08/2060	केतु 21/09/2074	शुक्र 15/09/2091	सूर्य 06/02/2108	00/00/0000
केतु 27/01/2061	शुक्र 21/09/2077	सूर्य 04/07/2092	चंद्र 07/09/2109	00/00/0000
शुक्र 29/03/2062	सूर्य 16/08/2078	चंद्र 03/11/2093	मंगल 17/10/2110	00/00/0000
सूर्य 04/08/2062	चंद्र 15/02/2080	मंगल 10/10/2094	राहु 23/08/2113	00/00/0000
चंद्र 05/03/2063	मंगल 04/03/2081	राहु 04/03/2097	गुरु 05/03/2116	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भोग्य के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 13 वर्ष 2 मा 24 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - चंद्र 04/07/2024 04/03/2026	शुक्र - मंगल 04/03/2026 05/05/2027	शुक्र - राहु 05/05/2027 04/05/2030	शुक्र - गुरु 04/05/2030 02/01/2033	शुक्र - शनि 02/01/2033 04/03/2036
चंद्र 23/08/2024 मंगल 28/09/2024 राहु 28/12/2024 गुरु 19/03/2025 शनि 24/06/2025 बुध 18/09/2025 केतु 23/10/2025 शुक्र 02/02/2026 सूर्य 04/03/2026	मंगल 29/03/2026 राहु 01/06/2026 गुरु 28/07/2026 शनि 03/10/2026 बुध 03/12/2026 केतु 28/12/2026 शुक्र 09/03/2027 सूर्य 30/03/2027 चंद्र 05/05/2027	राहु 16/10/2027 गुरु 10/03/2028 शनि 30/08/2028 बुध 02/02/2029 केतु 07/04/2029 शुक्र 06/10/2029 सूर्य 30/11/2029 चंद्र 01/03/2030 मंगल 04/05/2030	गुरु 11/09/2030 शनि 12/02/2031 बुध 30/06/2031 केतु 26/08/2031 शुक्र 04/02/2032 सूर्य 24/03/2032 चंद्र 13/06/2032 मंगल 09/08/2032 राहु 02/01/2033	शनि 04/07/2033 बुध 15/12/2033 केतु 21/02/2034 शुक्र 01/09/2034 सूर्य 29/10/2034 चंद्र 03/02/2035 मंगल 11/04/2035 राहु 02/10/2035 गुरु 04/03/2036
शुक्र - बुध 04/03/2036 03/01/2039	शुक्र - केतु 03/01/2039 04/03/2040	सूर्य - सूर्य 04/03/2040 21/06/2040	सूर्य - चंद्र 21/06/2040 21/12/2040	सूर्य - मंगल 21/12/2040 28/04/2041
बुध 29/07/2036 केतु 27/09/2036 शुक्र 18/03/2037 सूर्य 09/05/2037 चंद्र 03/08/2037 मंगल 03/10/2037 राहु 07/03/2038 गुरु 23/07/2038 शनि 03/01/2039	केतु 28/01/2039 शुक्र 09/04/2039 सूर्य 30/04/2039 चंद्र 04/06/2039 मंगल 29/06/2039 राहु 01/09/2039 गुरु 28/10/2039 शनि 04/01/2040 बुध 04/03/2040	सूर्य 09/03/2040 चंद्र 19/03/2040 मंगल 25/03/2040 राहु 10/04/2040 गुरु 25/04/2040 शनि 12/05/2040 बुध 28/05/2040 केतु 03/06/2040 शुक्र 21/06/2040	चंद्र 07/07/2040 मंगल 17/07/2040 राहु 14/08/2040 गुरु 07/09/2040 शनि 06/10/2040 बुध 01/11/2040 केतु 12/11/2040 शुक्र 12/12/2040 सूर्य 21/12/2040	मंगल 29/12/2040 राहु 17/01/2041 गुरु 03/02/2041 शनि 23/02/2041 बुध 13/03/2041 केतु 21/03/2041 शुक्र 11/04/2041 सूर्य 17/04/2041 चंद्र 28/04/2041
सूर्य - राहु 28/04/2041 23/03/2042	सूर्य - गुरु 23/03/2042 09/01/2043	सूर्य - शनि 09/01/2043 22/12/2043	सूर्य - बुध 22/12/2043 27/10/2044	सूर्य - केतु 27/10/2044 04/03/2045
राहु 16/06/2041 गुरु 30/07/2041 शनि 20/09/2041 बुध 06/11/2041 केतु 25/11/2041 शुक्र 19/01/2042 सूर्य 04/02/2042 चंद्र 03/03/2042 मंगल 23/03/2042	गुरु 01/05/2042 शनि 16/06/2042 बुध 27/07/2042 केतु 13/08/2042 शुक्र 01/10/2042 सूर्य 16/10/2042 चंद्र 09/11/2042 मंगल 26/11/2042 राहु 09/01/2043	शनि 05/03/2043 बुध 23/04/2043 केतु 13/05/2043 शुक्र 10/07/2043 सूर्य 27/07/2043 चंद्र 25/08/2043 मंगल 15/09/2043 राहु 06/11/2043 गुरु 22/12/2043	बुध 04/02/2044 केतु 22/02/2044 शुक्र 14/04/2044 सूर्य 29/04/2044 चंद्र 25/05/2044 मंगल 12/06/2044 राहु 29/07/2044 गुरु 08/09/2044 शनि 27/10/2044	केतु 04/11/2044 शुक्र 25/11/2044 सूर्य 01/12/2044 चंद्र 12/12/2044 मंगल 20/12/2044 राहु 08/01/2045 गुरु 25/01/2045 शनि 14/02/2045 बुध 04/03/2045

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही



FUTUREPOINT
Astro Solutions

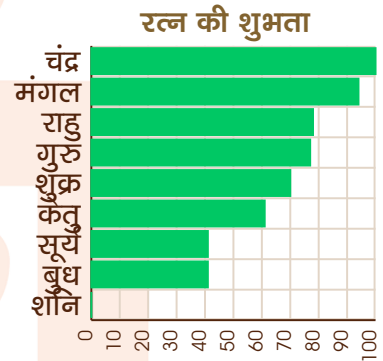


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	100%	स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	94%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	78%	स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	77%	व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	70%	सुख, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	61%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	41%	शत्रु व रोग, धन हानि
पन्ना	बुध	41%	सन्तति कष्ट, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	व्यावसायिक हानि, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	04/03/2013	52%	87%	94%	58%	77%	76%	0%	78%	61%
केतु	04/03/2020	16%	87%	100%	41%	77%	76%	0%	66%	73%
शुक्र	04/03/2040	16%	87%	94%	52%	77%	82%	0%	84%	67%
सूर्य	04/03/2046	58%	100%	100%	41%	83%	57%	0%	66%	47%
चंद्र	04/03/2056	52%	100%	94%	52%	77%	70%	0%	66%	47%
मंगल	05/03/2063	52%	100%	100%	16%	83%	70%	0%	66%	67%
राहु	04/03/2081	16%	87%	81%	41%	77%	76%	0%	91%	47%
गुरु	04/03/2097	52%	100%	100%	16%	89%	57%	0%	78%	61%
शनि	05/03/2116	16%	87%	81%	52%	77%	76%	12%	84%	47%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073 -----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
अशुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
धन
सुख
दुर्घटना से बचाव



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है अतः आप मांगलिक दोष से युक्त पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष भंग हो जाता है अतः ऐसे मंगल से आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही प्राप्त करेंगे। इससे आपका तथा आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु पत्नी के स्वभाव में उग्रता का भाव विद्यमान हो सकता है। इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में समस्त प्रकार से सुखैश्वर्य एवं धन धान्य को अर्जित करेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगे।

इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब तो होगा परन्तु विवाह करने में किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा तथा आनन्दपूर्वक सुखद वातावरण में आपका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न होगा। आप दोनों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा फलतः विवाह के पश्चात् दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा। पत्नी के स्वभाव में उग्रता होने के कारण यदा कदा आपसी संबंधों में अल्प मात्रा में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु यह सब थोड़े समय के लिए रहेगा तथा परस्पर संबंध पूर्ववत् घनिष्ठ एवं मधुर रहेंगे।

आपकी कुंडली में सप्तम भाव में स्थित मंगल आपको योग्य जीवन साथी प्रदान करने में सहयोग प्रदान करेगा तथा आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही मधुर एवं घनिष्ठ रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इस मंगल की दशम भाव पर दृष्टि होने से आप एक मान सम्मान युक्त प्रतिष्ठित पुरुष होंगे तथा समाज में पूर्ण रूप से यशार्जन करने में भी सफल रहेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में भी आप नित्य उन्नति करते रहेंगे। लग्न पर दृष्टि होने से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा क्रोध के भाव की अधिकता भी दृष्टिगोचर होगी। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आपका परिवारिक जीवन सामान्य तथा सुख एवं

शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा परन्तु यदा कदा अशान्ति या कलह का वातावरण भी अल्प काल के लिए उत्पन्न हो सकता है। विद्या प्राप्ति के क्षेत्र में भी आप हमेशा सफलता अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण सन्तोष एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक शुभ एवं सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी मंगली कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। ऐसा उचित मिलान होने पर आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे एवं एक भाग्यशाली पुरुष होकर धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे। जीवन में आपको किसी भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव नहीं रहेगा तथा सभी सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में आप सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जिस कन्या के सप्तम भाव में ही मंगल विद्यमान हो उस कन्या से विवाह की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए क्योंकि समान भाव में स्थित मंगल जीवन साथी के लिए अच्छा नहीं रहेगा जिस का उसके स्वास्थ्य पर प्रभाव होगा इससे आप दाम्पत्य जीवन का पूर्ण सुखोपभोग करने में परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इससे दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। इसके अलावा अन्य भावों में स्थित मंगल सभी कुप्रभावों को दूर करेगा। दाम्पत्य जीवन को सुखी तथा शान्ति पूर्वक व्यतीत करने में सहायक सिद्ध होगा। अतः सोच विचार कर ही अन्तिम रूप से निर्णय लेना चाहिए।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गगत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र कोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान् होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान्, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी आपको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मूर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उच्चभाव, धनी, विद्वान्, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(04/03/2020 - 04/03/2040)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 04/03/2020 को आरम्भ और 04/03/2040 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। यह मीन राशि में उच्च का और कन्या में निम्न का होता है। यह स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद आनन्द तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्म कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि दशम भाव पर है और इस भाव पर इसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। चतुर्थ भाव माता, भवन, घरेलू वातावरण, निजी मामलों, गुप्त जीवन, वाहन, उद्यान, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, जल, दूध, नदी तथा झील का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है और भाव को प्रबलित कर रहा है जो सुख स्थान का भाव है। इसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी तथा आप सामान्य रूप से जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र चतुर्थ भाव में भाव को प्रबलित कर रहा है। यह अचल संपत्ति और वाहन का भाव भी है। इस दशा काल में आप एक नया घर या नई गाड़ी ले सकते हैं। आपकी जीवन चर्या में उन्नति तथा आनन्द में वृद्धि होगी।

व्यवसाय :

शुक्र, एक योग कारक ग्रह, चतुर्थ भाव में स्थित है और आपकी जन्म कुण्डली के दशम भाव को देख रहा है, जो जीवन चर्या और व्यसाय का द्योतक है। इस दशा काल में आप जमीन-जायदाद के लेन-देन में व्यस्त रहेंगे और इसी से संबंधित व्यवसाय करेंगे। आपकी माता भी आपके व्यावसायिक जीवन को विकसित करने में सहायक होंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण और मैत्रीपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप भावुक होने के साथ-साथ धनवान, आदरणीय, और खुशहाल होंगे। आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा तथा आप परम्परा और मूल्यों का आदर करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंतर्दशा :- शुक्र - चन्द्र
(04/07/2024 - 04/03/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 04/03/2020 को प्रारंभ हुई थी और 04/03/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 04/07/2024 से प्रारंभ होकर 04/03/2026 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

चंद्रमा मष्तिष्क और माता का कारक है।

लग्न में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बहुत मूड़ी और संवेदनशील हो सकते हैं। कुछ समस्याएं उभर सकती हैं। आप और आपके जीवनसाथी सुंदर हैं। विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकर्षित होंगे जिससे कुछ परेशानी में फंस सकते हैं, अतः सावधान रहें।

घरेलू सुख उत्तम रहेगा। माता से संबंध मधुर रहेंगे। समय-समय पर बेचैन या कल्पनाशील हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा को कच्चा दूध चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए अर्पित करें।

अंतर्दशा :- शुक्र - मंगल
(04/03/2026 - 05/05/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/03/2020 को प्रारंभ होकर 04/03/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 04/03/2026 को प्रारंभ होकर 05/05/2027 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है।

सप्तम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 10, 1, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। आप मंगली हैं।

इस अवधि में आपकी वाणी में कटुता आएगी जिससे घरेलू जीवन में सुख में कमी आ सकती है, झगड़े बढ़ सकते हैं। विपरीत लिंग के व्यक्तियों के आगे समर्पण कर सकते हैं।

आपके क्रोध, ईर्ष्या और चालाकी से पूर्ण स्वभाव के कारण जीवनसाथी अगर मंगली नहीं है तो आपसे दूर हो सकते हैं। आपके दो जीवनसाथी हो सकते हैं।

ऊर्जा के सही दिशा में उपयोग के लिए प्रतिदिन हनुमान मंदिर में दर्शन करें और वहां हनुमान मंत्रों द्वारा पूजन करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - राहु
(05/05/2027 - 04/05/2030)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 04/03/2020 को प्रारंभ होकर 04/03/2040 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 05/05/2027 को प्रारंभ होकर 04/05/2030 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

प्रथम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप अध्ययनशील होंगे, मगर स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है। जीवन में अजीब घटनाएं घट सकती हैं। विवाहित जीवन में कठिनाई आ सकती है। आप स्वार्थी या शक्की स्वभाव के हो सकते हैं। पापकर्म में लिप्त हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

